इकाई -III Date:- 20.05.2020

Topic:- भाषा अर्जित करना और भाषा सीखने में अंतर

रुपमाला के पिताजी का तबादला सीतामढ़ी में हो गया और रुपमाला को बिहार की कई भाषाएँ सुनने-बोलने का परिवेश और अवसर मिला। सीतामढ़ी में मूलतः बज्जिका भाषा बोली जाती है और उसके आस-पास के क्षेत्र में मैथिली का भी प्रयोग किया जाता है। उनके घर में काम करने वाली राधा भोजपुरी बोलती है। लेकिन माला का परिवार न तो बज्जिका ही जानता है और न ही भोजपुरी और राधा को हिन्दी आती नहीं थी। फिर भी वह टूटी-फूटी हिन्दी में अपनी बात समझाना शुरू करती है और कभी-कभी जब उसे हिन्दी के उपयुक्त शब्द नहीं मिलते तो वह एक प्रवाह में भोजपुरी बोल जाती है। चुकि रुपमाला के माता-पिता नौकरी करते हैं और रुपमाला स्कूल से आने के बाद राधा के पास ही रहती है इसलिए वह धीरे-धीरे भोजपुरी सीख गई। रुपमाला के आस-पड़ोस में, बाजार में बज्जिका बोली जाती है तो रुपमाला को बज्जिका भाषा का परिवेश भी मिला। सीतामढ़ी के एक स्कूल में रुपमाला का दाखिला हुआ तो उसका हिन्दी और अंग्रेजी का अध्ययन जारी रहा। उसकी पढ़ाई का माध्यम भी अंग्रेजी ही रहा। क्या आप सोच सकते हैं कि रुपमाला कितनी भाषाओं में बातचीत कर सकती है? उसने इन भाषाओं का प्रयोग करना कैसे सीख लिया?

दरअसल रुपमाला को बचपन से ही एक से अधिक भाषाओं का परिवेश मिला और वह अपनी जन्मजात भाषा क्षमता के माध्यम से भाषाओं को सहजता के साथ अर्जित करती चली गई। भाषा अर्जन की स्थिति तब होती है जब हमें किसी भाषा का समृद्ध परिवेश मिले भाति वह भाषा हमारे आस-पास लगातार इस्तेमाल होती है। हम उस भाषा के विविध प्रयोगों को सुनकर नियम बनाते हैं और उन नियमों के आधार पर भाषा का विविधतापूर्ण प्रयोग करते हैं। भाषा अर्जित करने की प्रक्रिया में वे शब्दों के उन अर्थों से भी परिचित होते चलते हैं जो उन्हें समाज विशेष के साथ संपर्क करने से प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा में 'अंकल' 'आंटी' शब्द मिलते हैं जबकि बिहार आदि अनेक राज्यों में 'अंकल आंटी' जैसे शब्दों के स्थान पर चाचा, मामा, मौसा, फूफा, चाची, मामी, मौसी, बुआ, फूफी शब्द मिलते हैं, क्योंकि रिश्ते-नाते की यह शब्दावली भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। विदेश में तो सभी के लिए अंकल, आंटी शब्द का प्रयोग किया जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner